International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 1, Jan- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

मुझे बोलने दो जनपद की भाषा

(विजेन्द्र की कविता के संदर्भ में)

डॉ हरिहरानंद शर्मा
व्याख्याता हिन्दी
राजकीय आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
गनोड़ा, बांसवाड़ा

भावों और विचारों कीअभिव्यक्ति के लिए जो सार्थक ध्वनि प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है उसे भाषा कहते हैं। किंतु कविता में यह भाषा संकेत एक विशिष्ट क्रम में होता है। 'कविता का आदर्श ऐसी भाषा है जो एक ओर तो कवि के भावों और अनुभूतियों को अच्छे ढंग से व्यक्त कर सके पर साथ ही साथ दूसरी ओर जिसे उसके पाठक सरलता से समझ भी सके।'**1** भाषा गूंगे का गुड नही है। कवि के भावों और विचारों को पाठक तक पहुंचना भी परम आवश्यक है। काव्य चिंतन, काव्य रचना और अभिव्यक्ति भाषा के द्वारा ही होती है। पंत जी के अनुसार 'भाषा संसार का नादमय चित्र है, ध्वनिमय स्वरूप है, यह विश्व की हृत्तंत्री की झंकार है, जिसके स्वर में वह अभिव्यक्ति पाता है।'**2**

भाषा के माध्यम से कवि के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति होती है। इस अभिव्यक्ति से तथ्यों (बाह्य यथार्थ) और भावनाओं (आंतरिक यथार्थ) को जाना समझा जा सकता है। इस संदर्भ में क्रिस्टोफर कॉडवेल कहते हैं – 'भाषा बाह्य यथार्थ और और आंतरिक यथार्थ से तथ्यों और भावनाओं दोनों को ही अभिव्यक्त करती है। यह काम प्रतीकों के माध्यम से अर्थात् मानस में एक स्मृति बिंब जो कि बाह्य यथार्थ के किसी अंश का मानसिक प्रक्षेपण है और एक भावना जो कि किसी सहज वृत्ति का मानसिक प्रक्षेपण है, को उभार कर करती है।'**3** आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'कविता क्या है' निबंध में काव्य भाषा की चार विशेषताएं बताई हैं – 'मूर्ति विधान या चित्रात्मकता के लिए भाषा की शक्ति, विशेष रूप व्यापार सूचक शब्दों का प्रयोग, वर्ण विन्यास और नाद सौन्दर्य, व्यक्तियों के नामों के स्थान उनके रूप गुण या कार्यबोधक शब्दों का व्यवहार।'**4** काव्य भाषा के संदर्भ में सोचने पर यह पाते हैं कि कवि या भोक्ता दैनिक बोलचाल में जिस भाषा का प्रयोग करता है, कविता उस भाषा में नहीं लिखता। पाठक या श्रोता की भाषा भी काव्य भाषा नहीं है। 'कविता की भाषा न तो उस व्यक्ति विशेष जो भोक्ता है, की होती है, न ही श्रोता की। यानि, दोनों की सामान्य भाषा से अलग होती है ..... काव्य भाषा भोक्ता द्वारा अपने भाव एवं विचार को श्रोता की भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास है। इसी प्रयास में सामान्य भाषा से अलग हो जाती है काव्य भाषा।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 1, Jan- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सामान्य भाषा के शब्द नये संयोजन के कारण एक नया अर्थ देने लगते हैं।'**5** साहित्यकार का चिंतन प्रयोगात्मक होता है। वह समय – सापेक्ष भी होता है और इतिहास के ज्ञान से भविष्य दृष्टा भी होता है। इसीलिए एक समय में लिखी गई कविता दूसरी काल अवधि से भिन्न होती है। 'साहित्यकार अपने पूर्ववर्ती की अपेक्षा एक नए और अलग भाषिक मुहावरे, शिल्प का अन्वेषण करता है। एक ही साहित्यकार की कृतियों के बीच भी इस प्रकार का संबंध देखा जा सकता है। साहित्यकार की रचनाओं के समग्र कालखंड में उसका कथ्य, भाषा शिल्प परिवर्तित होता रहता है, भले ही परिवर्तन की दिशा गति भिन्न हो।'**6** विजेन्द्र की भाषा का एकाधिक स्तर देखे जा सकते हैं। कुलीन लोगों की भाषा ग्रामीण अंचल की भाषा, विद्रोह की भाषा आदि। ये विविधता इसलिए कि कथ्य की संप्रेषणीयता में किसी भी प्रकार की बाधा न हो। कथ्य की प्रकृति से भिन्न भाषा कवित्व के नकलीपन का अहसास कराती है। विजेन्द्र कहते हैं –

''ओह..... क्या करूँ इन कविताओं का
छंदों का, लय का, यति का,
जिनमें कहीं नहीं दिखते चित्र
लडती जनता के।'**7**

इसलिए विजेन्द्र क्रियाशील मनुष्य के जीवंत व्यवहार से भाषा सीखने की कोशिश करते हैं। इस प्रक्रिया में जन से जुडने की छटपटाहट उनमें देखी जा सकती है दोआब के होते हुए भी राजस्थानी के शब्द उनकी कविताओं में जिस प्रामाणिकता के साथ आते हैं वह इस बात का प्रमाण है। प्राणवान क्रियाओं से जुडे होने के कारण उनकी भाषा में व्यंग्य, विडंबना और आक्रमण करने की क्षमता है तथा भाषा ऐंद्रिक और बिम्बात्मक हुई है। साथ ही उसमें विविधता दिखाई देती है कहीं आम बोलचाल की तद्भव प्रधान भाषा है जिनमें लोकबोलियों के शब्दों को भरपूर स्थान मिला है तो कहीं संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्द। आवश्यकतानुसार जिस जीवन को व्यक्त करना है उसी तरह की भाषा। उनका मानना है –

''असरदार भाषा हलक से नहीं –
बडे इरादों वाले दिल से निकलती है।'**8**
भाषा की दरिद्रता शब्दो से नहीं
विश्वास की कमी से
पहचानी जाएगी।'**9**

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 1, Jan- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

विजेन्द्र प्रचलित काव्य संरचना की परिधि को लांघकर जनता के कवि बनते है। वे जनता के लिए कविता करते है। विषय की नवीनता में उनकी रूचि है पर वह जन के विरूद्ध नहीं है। वे जन के कवि हैं जनपद की बात करते हैं –

'शब्दों की साधना से ही चलके आया हूँ यहाँ तक,
मुझे बोलने दो जनपद की भाषा।'**10**

विजेन्द्र को अनेक भाषाओं का ज्ञान है, बावजूद इसके वे 'प्रयोग के लिये प्रयोग' नहीं करते। उनकी कविताओं में जडियापन या टकसाली भाव नहीं है। वे शब्द पर विशेष भार देते हैं पर किसी विशिष्ट प्रयोजन से। अज्ञेय ने काव्य में शब्द के संदर्भ में कहा है – 'काव्य सबसे पहले शब्द हैं और अंत में यही बात बच जाती है कि काव्य शब्द है। सारे कवि धर्म इसी परिभाषा से निःसृत होते हैं।'**11**परंतु दूसरे सप्तक की भूमिका में वे महसूस करते हैं –'भाषा के विकास के क्रम में कविता की भाषा निरन्तर गद्य की भाषा होती जा रही है।'**12** तो ऐसी स्थिति में शब्द का स्थान वाक्य ले सकता है।

विजेन्द्र हिन्दी वाक्यो में हिन्दी कविता लिखते हैं। भाषा बोध की इकाई वाक्य है शब्द नहीं। विजेन्द्र ने शब्दों में जीवन भरा है उनके लिए शब्द का अर्थ है जीवन से घनिष्ठ साक्षात्कार होना। विजेन्द्र के काव्य शिल्प पर विचार करें तो दिखाई देगा कि उनकी कविता साहित्यिकपने से दूर रहती है क्योंकि नियत साहित्यपन या निश्चित लालित्य कविता को यथार्थ से दूर रखता है जो उनके कवि कर्म से मेल नहीं खाता है। उनका मानना है कि भाषा के ठेठपन को नष्ट करके या किसी नियत भाव से गढ करके या किसी तर्ज पर कविता करना नकल करने जैसा है उसके लिए नकली भाषा और नकली कवि होना होगा। और यह उन्हे कतई पसंद नहीं होगा। कोई इसे हठ माने तब भी वे किसी की परवाह नहीं करते। वे अपनी बनाई राह पर चलते हैं यह राह जन के मन की है और भाषा भी इसी जन मन के अंदर की है। त्रिलोचन ने 'जनभाषा और काव्य भाषा' नामक लेख में लिखा है –'काव्य की दृष्टि से तो नहीं, पर भाषा के अर्थों की दृष्टि से द्विवेदी युग के कवितयों ने हिन्दी के सहज रूप को रखा है। छायावाद काल में काव्य का स्तर उंचा हुआ है, किन्तु भाषा घायल दिखाई देती है। पुरानी भाषा, जिसे काव्य भाषा कहकर पढा और पढाया जा रहा है, वर्तमान रचनाधर्मी के प्रयोजन की वस्तु कम ही है।'**13** विजेन्द्र के काव्य की भाषा में जीवन की हलचल है, सामान्य बोलचाल की भाषा का ठाठ है–

'खेत काटने जाती सिलहारिन, रंग चटक है

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 1, Jan- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

लहॅगा फरिया के।

हाथ धरे सिर हॅसिया है

पासी कंधे पर, बगल लगी पोटली, सिया है

अधेड, नवेली बहुएं, कन्या पीछे, मटक है

चाल अजब सी

टोल बांध कर चुलबुल करती।'**14**

कवि प्रकृति के भावविभोर कर देने वाले स्वरूप को कविता में ढालकर कहता है –

'डार डार भौरें झूले हैं

राई मटर रॅगन मगन है

धूप सना खुला गगन है

बौर आम का देखा पहले

ऑखों से जो चाहे कहले।'**15**

विजेन्द्र की कविता में ठेठ देशज शब्द जितनी सहृदयता से अनायास चले आते हैं पर साथ ही साथ उनकी अर्थव्याप्ति भी उन शब्दों की गरिमा को बढा देती है। प्रकृति के बीच जीने वाले प्राणी में उत्तम प्राणी किसान है जो अपने श्रम से पशु और प्रकृति सभी को नया जीवन देता है। उसके लिए खेत सगे भाई से कम नहीं होते। इस दृष्टिकोण से उनकी कविता 'खेत सगे हैं' उल्लेखनीय है जहां उन्होंने सामान्य शब्दों से विशिष्ट अर्थ प्रदान किया है –

'खेत पके हैं सखा सगे हैं

कहीं हरित हैं

कहीं रजत हैं

सोम चढे हैं

ढेर बडे हैं

केर लगे हैं

वसन चढे हैं।**16**

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 1, Jan- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

विजेन्द्र लोक के कवि हैं, जन के कवि हैं । उनकी काव्य भाषा आभिजात्य के ढॉचे को तोड़ती है। उनकी कविता दरबार से मुक्त लोक क्रियाओं की सक्रियताओं की कविता है ।

''मैं हूं जनतंत्र का कवि
दूर हूॅ दरबार से
लिखता हूं मुक्त छंद लयवान
चरित्र सृष्टि को
लोक क्रियाओं में बांधकर
कह रहा प्रवाह प्राणों का।'**17**

उनका मानना है, कि भाषा किताब पढकर नहीं सीखी जाती। भाषा तो श्रम करते हुए आदमी को बोलते हुए सुनी जाने से सीखी जाती है।

'शब्द जनमते हैं
क्रियाओं से
उनमें
जीवन का अनुपम बल है।'**18**

यह बल लोक में डूबने से ही प्राप्त किया जा सकता है। वे प्रत्येक रचना करते समय कथ्य में गहरे तक उतरते हैं उसकी जडों को टटोलते हैं और इतना ही नहीं उसके भौतिक रचाव और स्वभाव को व्यक्त करने के लिए वैसी ही भाषा का प्रयोग करते हैं। प्रसिद्ध आलोचक डॉ जीवन सिंह ने उनकी भाषा के संदर्भ में लिखा है – 'वे जिस लोकांचल से संबद्ध हैं कविता में उसी लोकराग को शब्दाकृति देते हैं। ब्रज और मरू जनपद की लोकभाषाओं का गहरा रचाव उनके मुहावरे और काव्य भाषा में है, वह कविता की दुनिया में केवल नवोन्मेषी ही नहीं है बल्कि अपने समय के सच की प्राण प्रतिष्ठा भी करती है।'**19**

विजेन्द्र की कविता में प्रवाह लय और कसाव का समन्वय है। विजेन्द्र की कविता में आंतरिक लय भी दिखाई देती है यह कसाव और आंतरिक लय अनुशासित है। भाषा एवं शब्द विधान में कवि सतर्क और सचेत है। विजेन्द्र के 'घना के पांखी', 'पकना ही अखिल है', 'उठे गूमडे नीले', 'धरती कामधेनु से प्यारी' 'जनशक्ति', 'कठफूला बांस', 'ढल रहा है दिन', 'बनते मिटते पॉव रेत में' आदि कविताओं की भाषा से ही स्पष्ट हो जाता है कि कवि कविता के विषय, पात्र, घटना आदि के प्रति सचेत रहा है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 1, Jan- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

विजेन्द्र की कविता की भाषिक संरचना में शब्द चयन, कहावतें, मुहावरे, नीतिगत वाक्य, मार्मिक संवेदनापरक संवाद और शब्दों की अर्थव्याप्ति का विशेष महत्त्व है। वे पारम्परिक शब्द में नया अर्थ भरते हैं, लोक शैली की तरह संवादों में कहावतों का इस्तेमाल करते हैं। मुहावरों के द्वारा जीवतंता भरते हैं। वाक्यों को जीवनधर्मी वाक्य में रूपांतरित करते हैं। कहना होगा कि कवि का भाषा बोध वैज्ञानिक एवं व्याकरणिक ही नहीं संवेदनात्मक एवं ज्ञानात्मक भी है। शब्द के विविध रूप और उनका सम्यक् प्रयोग एवं शिल्प विज्ञता विजेन्द्र की कविता में दिखाई देती है।

संदर्भ :–

1. प्रगतिशील हिन्दी कविता, डॉ रणजीत, पृ. 252, साहित्य रत्नालय, कानपुर 1986
2. पल्लव की भूमिका, पल्लव, सुमित्रानंदन पंत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1963
3. धूमिल और परवर्ती जनवादी कविता, श्रीराम त्रिपाठी, पृ. 83, रंगद्वार प्रकाशन, अहमदाबाद 2002
4. चिन्तामणि, भाग – 1, रामचन्द्र शुक्ल,पृ. 115 – 118, इंडियन प्रेस प्रा. लि. इलाहबाद 1996
5. धूमिल और परवर्ती जनवादी कविता, श्रीराम त्रिपाठी, पृ. 84, रंगद्वार प्रकाशन, अहमदाबाद 2002
6. फणीश्वरनाथ रेणु का कथा साहित्य, वीरेन्द्र नारायण सिंह, पृ. 7, रवि प्रकाशन, अहमदाबाद 1998
7. बनते मिटते पांव रेत में (कविता संग्रह), विजेन्द्र, पृ. 29, वाड्मय प्रकाशन, जयपुर 2013
8. अरावली, ऋतु का पहला फूल (कविता संग्रह) विजेन्द्र, पृ. 166, पंचशील प्रकाशन, जयपुर 1994
9. उगान, पहले तुम्हारा खिलना (कविता संग्रह), विजेन्द्र, पृ. 92, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली 2004
10. ओ एशिया, कठफूला बांस (कविता संग्रह), विजेन्द्र, पृ. 92, रॉयल पब्लिकेशन जोधपुर, 2013
11. तार सप्तक, संपादक अज्ञेय पृ. 301
12. वही पृ. 11
13. त्रिलोचन संचयिता, संपादक ध्रुव शुक्ल, पृ. 493 – 495, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2002
14. पकना ही अखिल है, विजेन्द्र पृ. 112, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, 2009
15. घना के पांखी (कविता संग्रह) विजेन्द्र, पृ. 13, सार्थक प्रकाशन, नई दिल्ली 2000
16. वही, पृ. 22
17. अमीर चंद वैश्य के आलेख से, लेखन सूत्र पत्रिका, संपादक प्रेमशंकर रघुवंशी, पृ. 137, जनवरी से जुलाई 2006
18. अरावली, ऋतु का पहला फूल, विजेन्द्र पृ. 166, पंचशील प्रकाशन, जयपुर 1994
19- महेश चंद्र पुनेठा के आलेख से, लेखन सूत्र पत्रिका, सं. प्रेमशंकर रघुवंशी, पृ. 122, जनवरी –जुलाई 2006